युगल ध्यान

श्रीप्रिया बदन छबि चन्द्र मनो, प्रीतम नैन चकोर।
प्रेम सुधारस माधुरी, पान करत निसि भोर।।1।।
अंगन की छवि कहा कहो, मन में रहत विचार।
भूषन भये भूषननिको, अति स्वरूप सुकुमार।।2।।
रंग मांग मोतिन सहित, शीश फूल सुख मूल।
मोर चन्द्रिका मोहिनी, देखत भूली भूल।।3।।

श्याम लाल बेंदी बनी, शोभा बनी अपार।

प्रगट विराजत शशिन पर, मनों अनुराग सिंगार।।4।।

कुण्डल कल तांटक चल, रहे अधिक झलकाइ।

मनो छवि के शशि भानु जुग, छबि कमलनि मिलिआइ।।5।

नासा बेसर नथ बनी, सोहत चञ्चल नैन।

देखत भाँति सुहावनी, मोहै कोटिक मैन।।6।।

सुन्दर चिबुक कपोल मृदु, अधर सुरंग सुदेश।

मुसकनि वरषत फूल सुख, कहि न सकत छबि लेश।।7।।

अंगनि भूषनि झलकि रहे, अरु अञ्जन रंग पान।

नव सत सरवर ते मनों, निकसे कर स्नान।।8।।

कहि न सकत अंगन प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ।

मानो बागे रूपके, पहिरे दुहुन बनाइ।।9।।

रतनागंद पहुंची बनी , बलया बलय सुढार।

अंगुरिन मुंदरी फव रही, अरु मेहँदी रंग सार।।10।

न्द्रहार मुक्तावली, राजत दुलरी पोति।

पानि पदिक उर जग मगै, प्रतिविम्बित अंग जोति।।11।।

मनि मय किंकिन जाल छवि, कहौ जोइ सोइ थोर।

मनों रूप दीपावली, झलमलात चहुँ ओर।।12।।

जेहर सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारु।
और छाँड़ि कै या छविहि, हिय कै नैन निहारु।।13।।
बिछुवनि की छवि कहा कहौ, उपजत रव रूचि दैन।
मनु शावक कल हंस के, बोलत अति मृदु बैन।।14।।
नख पल्लव सुठि सोहने, शोभा बढ़ी सुभाइ।
मानों छवि चन्द्रावली, कंज दलन लगि आइ।।15।।
गौर वरन सांवल चरण, रचि मेंहदी के रंग।
तिन तरुवनि तर लुटत रहें, रति जुत कोटि अनंग।।16।।

अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार।
इक छत प्रेम छके रहै, अदभुत प्रेम विहार।।17।।

अनुपम सांवल गौर छवि, सदा बसहु मम चित्त।
जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रहै नित्त।।18।।

बरनै दोहा अष्टदस, युगल ध्यान रसखान।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छवि उर में आन।।19।।

पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिन सों अति प्यार।
ऐसे लाड़िली लाल के, छिन-छिन चरण संभार।।20।।

।।जै जै श्री हित हरिवंश।।

।। जै जै श्री हित हरिवंश ।।